A farmer taking up Bamboo cultivation will never have to succumb to Suicide!

Nimad has been known for its Neem trees and large fields covered with cotton and chillies. Mr Vijay Patidar, a resident of Mengaon, district Khargone, M.P., intends to make Bamboo as the new identity of the village.

High risk and huge losses faced by farmers engaged in conventional farming pushed Mr. Patidar to look for more viable alternatives and bamboo cultivation emerged as one such option. Reflecting back on the past two years of bamboo farming, he said that the crop is immune to changing weather conditions and thus offers low risk. Being a beneficiary under the scheme, he said that the subsidy provided by the State Bamboo Mission of Rs. 120 per plant in three years, brings down the total cost further down. Moreover, since bamboo is less prone to pest infestation and diseases faced normally by other crops, application of expensive chemicals and fertilisers also reduces.

He had planted 4000 saplings of Bambusa Bambus in 2019 and looked after them with great care. In two years, he sold bamboo poles for Rs 75,000 to other farmers to be used by them as support for climbers raised by them.

Mr. Patidar said that from 4th year onwards, a minimum of 10 poles of around 40 ft per clump can be harvested. Likewise, from 4000 plants, in 4th year, a yield of 40,000 poles can be obtained. Considering a sale price of Rs 100 per pole, a total of Rs 40,00,000 can be earned, which is many times higher than income from other crops. He is being contacted by big traders to purchase the yield from him and thus believes that there is good market for bamboo. He has experimented with intercropping of bamboo with chilli, capsicum, ginger, and garlic and has observed that it leads in reduced water consumption by these crops as they grow under the shade of tall bamboo plants and are protected from excessive heat. He advises other local farmers to grow bamboo on at least 10% of their fields so that they get a higher return without additional risk. He said that from 4th year onwards, around 1000 quintals of dry leaves per acre is obtained from bamboo that can easily be composted and utilised as manure. It sequesters more carbon dioxide as compared with other trees and serves as a useful tool in climate change.

"बांस लगाने वाले किसान कभी आत्महत्या नहीं कर सकते"

निमाड़ क्षेत्रा की पहचान नीम के पेड़ तथा मिर्च एवं कपास की प्रचलित फसलों से होती आई है। इस क्षेत्रा को बांस के माध्यम से नई पहचान देने का बीड़ा खरगोन तहसील के मेनगांव के श्री विजय पाटीदार ने उठाया है। श्री विजय पाटीदार द्वारा अपने क्षेत्रा में वर्ष 2019 में कटंग बांस के 4000 पौधे लगाकर उनकी खूब देखभाल की। इसका परिणाम यह हुआ कि दो ही वर्षों में उन्होंने सब्जी की खेती में पौधें को सहारा देने हेतु काम आने वाले 75 हजार रूपये के बांस के डंडों का उत्पादन कर लिया है।

श्री विजय पाटीदार को बांस के पौधे लगाने की प्रेरणा इस बात से मिली कि क्षेत्रा की परम्परागत फसलों में काफी अधिक मेहनत करने के बाद भी कई बार घाटा सहन करना पड़ता था। इसलिए श्री पाटीदार लगातार इस खोज में लगे रहते थे कि ऐसी कौन सी फसल हो सकती है जो किसानों को कम मेहनत और कम रिस्क में अधिक लाभ दे सके। श्री पाटीदार की खोज बांस की फसल पर आकर समाप्त हुई। 2 वर्षों के अनुभव के आधार पर श्री विजय ने बताया कि बांस की फसल मौसम के सभी उतार–चढ़ावों से अछूती रह जाती है। श्री पाटीदार ने बताया कि क्योंकि बांस के पौधे लगाने पर राज्य बांस मिशन द्वारा 3 वर्षों में प्रति पौधा 120 रूपये का अनुदान दिया जाता है इसलिए किसान के लिए लागत बहुत कम रह जाती है और बांस की फसल पर किसी प्रकार की बीमारी अथवा कीड़ा नहीं लगने की वजह से उनके के लिए महॅगी दवाओं का एवं रासायनिक खादों का भी उपयोग अनावश्यक रहता है ।

श्री विजय पाटीदार द्वारा बताया गया कि बांस लगाने के चौथे साल से प्रति भिर्रा न्यूनतम 10 बांस लगभग 40 फीट लम्बे प्राप्त हो सकते हैं और इस तरह 4 साल के 4000 पौधों से 40 हजार बांस प्राप्त होंगे। प्रति बांस रू. 100 के हिसाब से बिक्री होने पर लगभग 40 लाख की फसल प्राप्त होगी। इस क्षेत्रा में लगने वाली किसी भी फसल से यह फसल कई गुना ज्यादा मुनाफा दिलाने वाली फसल होगी। श्री पाटीदार द्वारा बताया गया कि इन बांसों को ग्राहक स्वयं खेत तक आकर ले जायेंगे क्योंकि अच्छे बड़े खरीददार उनसे बांस खरीदने के लए लगातार संपर्क कर रहे हैं। इन बांस की फसल की पैदावार के अलावा श्री पाटीदार द्वारा बांस के पौधों की

कतारों के मध्य में इन्टरक्रापिंग के भी प्रयोग किये जा रहे हैं। बांस की कतारों के मध्य मिर्च, शिमला मिर्च, अदरक एवं लहसुन की फसल लगाई गई है एवं इन प्रयोगों के अनुभव से यह बताया कि बांस के पौधों की कतारों में होने से इन फसलों में पानी कम लगता है तथा गर्मी के विपरीत प्रभाव से बच जाने की वजह से उत्पादन अच्छा होता है ।

श्री विजय पाटीदार के द्वारा बताया गया कि प्रतिदिन उनके पास बांस की फसल एवं उसके इन्टरक्रोपिंग के प्रयोगों को देखने के लिए 4–5 किसान आते रहते हैं तथा सभी लोग इसको बेचने में आने वाली दिक्कतों के बारे में पूछते रहते हैं।

श्री विजय पाटीदार के द्वारा क्षेत्रीय किसानों को यह सलाह दी गई है कि अपने खेत के 10 प्रतिशत हिस्से में बांस की फसल को अवश्य लगावें क्योंकि यह कम रिस्क में लगातार अधिक मुनाफा देने वाली फसल होने के कारण किसानों के माथे से चिंता की लकीरें मिटाने के लिए पूरी तरह से सक्षम है ।

श्री पाटीदार द्वारा बताया गया कि बांस की फसल से चौथे साल में प्रति एकड़ 1000 क्विंटल बांस की सूखी पत्ति प्राप्त होती है। इस पत्ती को जमीन में गाड़कर उच्च गुणवत्ता की कम्पोस्ट खाद भी बनाई जाती है जिसका उपयोग किसान सब्जी एवं अन्य तरह की खेती के लिए कर सकते हैं । इसके अलावा श्री विजय द्वारा बताया गया कि जलवायु परिवर्तन की समस्या से निजात दिलाने के लिए बांस की फसल पूरी तरह से कारगर है।